CHETANA
International Journal of Education
(CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

शोध-पत्र

Received 18.01.2023 Reviewed 26.01.2023 Accepted 09.02.2023

तक्षशिला एक पुरातात्विक अध्ययन

*डॉ. अनुपमा गोदारा

तक्षशिला के अवशेष, रावलपिंडी से 20 मील उत्तर–पश्चिम में स्थित सराल–कला रेलवे स्टेशन के बिल्कुल निकट उत्तर–पूर्व तथा पूर्व में स्थित हैं।"[प] यह घाटी भली–भाँति सम्पन्न रही हैं। जहाँ एक ओर घरों एवं इसकी अन्य सहायक नदियाँ इसे पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध कराती है तो इसके उत्तर तथा पूर्व में हजारा तथा मुर्री पर्वत की हिम आच्छादित चोटियाँ थी। तो दक्षिण तथा पश्चिम में मर्गला पर्वत चोटियाँ।

तक्षशिला की उत्कृष्ट व्यापार मार्ग पर उपस्थिति इसे हिन्दुस्तान को मध्य तथा पश्चिम एशिया से जोड़ती थी। जल की बहुतायता, मृदा का उपजाऊपन तथा प्राकृतिक रक्षण के के कारण यह शहर आरम्भ से ही बेहद महत्वपूर्ण रहा। एरियन लिखता है "एलेम्जेंडर के समय यह शहर एक फलता–फूलता शहर था वास्तव में सिंधु तथा झेलम के मध्य स्थित सभी शहरों में सबसे महत्वपूर्ण।"[पप] स्ट्राबों बताता है कि "यह शहर बेहर धनी जनसंख्या तथा अत्यन्त उपजाऊ भूमि वाला था।"[पपप] ह्वेनसांग भी इसी प्रकार "इसकी भूमि के उपजाऊपन तथा सम्पन्नता का उल्लेख करता है।"[पअ]

प्राचीन तक्षशिला के खण्डरों को खोजने का कार्य सबसे पहले कनिंघम[अ] के द्वारा आरम्भ किया गया, लेकिन वास्तविक उत्खनन भारतीय पुरातत्व विभाग के जॉन मार्शल[अप] के नेतृत्व में 1912 ई. में शुरू हुआ। ऐसा प्रतीत होता है कि विभिन्न कालों में यह शहर विदेशी आक्रमण तथा अन्य कारणों से नई बस्ती के रूप में इधर–उधर खिसकता रहा इसकी सबसे पहली बस्ती पाकिस्तान के अवशेष रावलपिंडी जिले के मीर के टीलों से जो ईसा–पूर्व पाँचवीं से दूसरी शती के मध्य है, प्राप्त हुए है, दूसरी बस्ती रावलपिंडी से 22 मील उत्तर सिरकप के खण्डरों से , जो ईसा–पूर्व दूसरी से पहली शती के मध्य के है, तथा तीसरी बस्ती उससे भी उत्तर सिरमुख से प्राप्त हुई है, ई.पू. पहली से ईसा की प्रथम सदी के मध्य की हैं।

मीर टीला

प्राचीनतम नगर जो 500 B.C के लगभग मीर टीले के रूप में अस्तित्व में आया तथा इसका अस्तित्व 200 B.C तक बना रहा यद्यपि अपने उद्भव के समय यह अखमानियों के अधीन रहा, जबकि 300 B.C से 200 B.C के मध्य यह मौर्य सम्राज्य का हिस्सा रहा। मीर टीले का क्षेत्रफल लगभग 70 हैक्टेयर था।

उत्तर भारत में जैसा असंख्य प्रारम्भिक ऐतिहासिक नगरों के साथ है मीर टीले के नगरीय केन्द्र में भी कच्ची ईंटो और इमारती लकड़ी की किलेबंदी थी। इस प्राचीनतम नगर के मामले में यह ज्ञात होता है कि बाद के नगरों के विपरित यह नियोजित नगर नहीं था और इसका विस्तार धीरे–धीरे अव्यवस्थित रूप में हुआ, जिसके कारण इसका नक्शा थोड़ा सा अनियमित प्रतीत होता है। यद्यपि यहाँ एक चौड़ा मार्ग था लेकिन सड़के तथा गलियाँ अत्यंत सकरी थी। मार्शल[अपप] ध्यान आकृषित करते है कि मुख्य सड़क के स्तर को जानबुझकर नीचे रखा गया था, किनारे की सड़के तथा मुख्य सड़क से सटे घर समय के साथ निरन्तर ऊपर उठते गए। मलजल व कचरे के निस्तारण के लिए अलग व्यवस्था थी। मलजल के लिए घरों के अंदर तथा नगर में खुले चौराहों दोनों जगहों

पर सोख कुएँ बने थे। सामान्यतः एक सोख गड्ढ़ा आंगन में और दूसरा स्नान क्षेत्र में था। अनगढ़े पत्थरों से निर्मित बड़े सार्वजनिक कूड़ेदान सार्वजनिक चौराहों और सड़कों पर थोड़े–थोड़े फासलों पर रखे गए थे।

सिरकप

"सिरकप के अवशेष रावलपिंडी के 22 मील उत्तर में प्राप्त हुए हैं, जो तक्षशिला के द्वितीय शहर का प्रतिनिधित्व करते हैं, यह उत्तर–पश्चिमी भारत के सबसे महत्वपूर्ण शहरों में से एक था, राजनैतिक तथा शिक्षा के केन्द्र दोनों ही रूपों में। यह हाथियाल पर्वत श्रृंखला की पश्चिमी तलहटी तथा तमरा नाला के पूर्वी किनारे के मध्य स्थित था।"

200 B.C के लगभग बैक्ट्रियन यवनों ने मीर टीला के उत्तर–पूर्व में तमरा जलधारा के पास एक नये नगर का निर्माण सिरकप के रूप में किया। जॉन मार्शल के द्वारा यहाँ व्यापक उत्खनन का कार्य करवाया गया, बाद 1944–45 में अमलानंद घोष द्वारा। बैक्ट्रियन यवनों के द्वारा इस नये स्थल के चयन के अनेक कारण थे, जैसे विस्तृत समतल मैदान, जिसके चारों और कम ऊँची पहाड़ियाँ तथा पानी की नियमित आपूर्ति के लिए निकट ही पानी के सोते उपलब्ध थे। सिरकप में भी किलेबंदी थी लेकिन मीर के टीले के विपरित यहाँ दीवार पत्थर तथा मिट्टी की बनी थी। यह नगर मीर टीले के नगर से अनेक प्रकार से भिन्न था। सबसे पहले इसकी योजना समानान्तर मार्गों से बनाई गई थी जो नगर को स्पष्ट रूप से पहचाने गए ब्लॉकों में विभाजित करती थी। दूसरा सोख कुओं और सार्वजनिक कूड़ेदानों की पूर्णरूपेण अनुपस्थिति रही ऐसा तो नहीं था कि प्रत्येक ग्रहस्थ अपने कूड़े के निस्तारण के लिए स्वयं उत्तरदायी था। तीसरा घरों की योजनाएँ और घरों के प्रांगणों की स्थितियाँ भिन्न थी। चौथा, अनगढ़े पत्थरों की चिनाई के साथ–साथ घरों के निर्माण में एक नई और अधिक स्थायी प्रकार की डायपर (Diaper) चिनाई दृष्टिगोचर होते हैं। पाँचवां मीर के टील के घरों के बाहरी तथा आंतरिक दोनों ही दीवारों पर मिट्टी के प्लास्टर का प्रयोग किया गया था जबकि सिरकप में आंतरिक दीवारों पर मिट्टी के प्लास्टर तथा बाह्य दीवारों पर चूने के प्लास्टर का प्रयोग किया गया।

मार्शल[अपपप] के अनुसार 20 A.D के लगभग एक विनाशकारी भूकम्प ने नगर को नष्ट कर दिया, तो पार्थियन के द्वारा एक नया नगरीय केन्द्र बसाया गया, नवीन नगरीय संरचना से प्रतीत होता है, उन्होंने भूकम्प के खतरे को कम करने के लिए अनेक तरीके अपनाए, इनमें से एक निर्माण की ऐसी पद्धति की शुरूआत की जो "Diper" 'डायपर' चिनाई कहा गया दूसरा नगरों की बुनियाद को अधिक गहरा बनाना। तीसरा घर के सबसे निचले तल को भू–स्तर के नीचे बनाना।

सिसमुख

लगभग 100 B.C के लगभग कुषाणों के द्वारा सिरकप की उत्तरी दीवार से लगभग 1.6 कि.मी. दूर उत्तर–उत्तरपूर्व लूंदी नाले किनारे बसाया गया। यह लगभग 138 हैक्टेयर क्षेत्रफल था जो पार्थियन नगर का लगभग दोगुना था, यह किलेबंद शहर, सिरकप की किलेबन्दी से कही अधिक सुदृढ़ था क्योंकि यह ठोस डायपर (diper) चिनाई से निर्मित था। सम्भवतः इसका निर्माण कुषाण शासक विम कडफिसेस द्वारा कराया गया था।

सिरमुख में अत्यन्त ही सीमित स्तर पर अत्खनन किया गया मार्शल[पग] द्वारा यहाँ दो कारणों से यहाँ विस्तृत अत्खनन नहीं किया गया, "एक क्योंकि यह एक नीचला क्षेत्र था, जिसमें खेती होती थी और दूसरा इसके अधिकतर हिस्से के गाँव और क्रब स्थल मौजूद थे।"

तक्षशिला घाटी में स्थित अन्य स्थल

मीर टीला, सिरकप तथा सिरमुख में अनेक नगरीय केन्द्रों के अलावा तक्षशिला घाटी का सम्पूर्ण क्षेत्र 18×8 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र में फैला था, जिसमें 55 से अधिक स्तूप 28 से अधिक मठ तथा 9 मंदिर थे। "ये धार्मिक स्थल स्थापत्य के क्रमिक विकास को स्पष्ट करते है।"[ग] धर्मरजिका स्तूप जिसका निर्माण मौर्यकाल में हुआ लेकिन इसका परिवर्धन कुषाण काल तक चलता रहा। इसी प्रकार खादर, मोहरा, कलावन, गिरी, कुनाल घर्ड लालचक, मामला में अनेक बौद्ध परिसर थे इनके से कुछ मौर्यकालीन तथा कुछ चौथी तथा पाँचवीं सदी तक है। वही जांदियाल मंदिर के साक्ष्य, जिनका संबंध इसके कालानुक्रम और इसकी धार्मिक संबद्धता का संबंध है, अधिक अस्पष्ट हैं अततः मार्शल[गप] ने तर्क दिया है कि यह बैक्ट्रियन यवनों के काल का है, आयोनिक शैली के स्तम्भों की

उपस्थिति, बौद्ध जैन, ब्राह्मण प्रतिमाओं अथवा अवशेषों की उपस्थिति से उनका अनुमान है, कि इनका निर्माण बैक्ट्रियन राजाओं द्वारा कराया गया।

सिरकप में पार्थियाई नगर के अंदर पाए गए स्तूपों का प्रयोग तथा रखरखाव संभवतः ब्लाक में घरों के निवासियों द्वारा, दूसरे शब्दों में बौद्धमत के साधारण अनुयायियों द्वारा किया जाता था। नगर निवासियों के अलाव, बौद्ध भिक्षुओं की अत्यंत बड़ी आबादी नगरों के बाहर मठों में रहती थी यह रोचक है, अधिकतर बौद्ध देवालय और मठ घाटी की अपेक्षा पर्वत शिखरों पर थे।

निष्कर्ष

500 B.C से 500 A.D के मध्य मीर, सिरकप, सिरसुख में नगरीय केन्द्रों के उद्भव में तक्षशिला घाटी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा यह पश्चिम एशिया, मध्यएशिया, गंगा के मैदान का प्रवेशद्वार था।

संदर्भ ग्रन्थ

---

i घोष, अमलानंद, तक्षशिला (सिरकप), 1944–45, पृ. 1

ii मेक्रक्रिंडल, दी इन्वेजन ऑफ इण्डिया बाए एलेक्जेण्डर दी ग्रेट, पृ. 92

iii मेकक्रिंडल, एशियेंट इण्डिया, पृ. 33

iv वाल्टर्स, ऑन युवान चांग ट्रेवल्स, वाल्यूम–1, पृ. 240

v कनिंघम, एलेक्जेण्डर, आर्कियोलाजीकल सर्वे ऑफ इण्डिया रिपोर्ट– II (Shimla, 1871) IIIf

vi मार्शल, जॉन, आर्कियोलाजीकल सर्वे ऑफ इण्डिया एनुअल रिपोर्ट 1912–13 (कलकत्ता 1916)

vii मार्शल, जॉन, एन इलस्ट्रेटेड एकाउंट ऑफ आर्कियोलाजीकल एक्सकेवेशन 1913–34, भाग I-III, पृ. 90–91

viii मार्शल, जॉन, वही, पृ. 198–199

ix मार्शल, जॉन, ए गाइड टू तक्षशिला, 1936, पृ. 165

x मार्शल, जॉन, एन इलस्ट्रेटड एकाउंट ऑफ आर्कियोलाजीकल एक्सकेवेशन 1913–34, भाग I-III , पृ. 227–397

xi मार्शल जॉन, ए गाइड टू तक्षशिला, 1936, पृ. 132

Corresponding Author
*** डॉ. अनुपमा गोदारा**
सहायक आचार्य इतिहास
राजकीय महाविद्यालय विद्याधर नगर, जयपुर
Email-anupamagodara81@gmail.com, Mobile-9784661603